कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MSK–004

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2023

एम. एस. के.–004 : आधुनिक संस्कृत साहित्य और साहित्यशास्त्र

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न-पत्र कुल* ***दो*** *खण्डों में विभक्त है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं। प्रत्येक खण्ड में दिये गये निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

निर्देश: *अधोलिखित में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए।* *3×20=60*

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** श्लोक की व्याख्या कीजिए :

(क) निरन्तरं व्योम्नि: ववः प्रवात्या
अदर्शि रात्रावपि धर्मकेतः
विधे! न जाने भविता किमस्ति
त्यानारतं जानपदैर्ण्यतर्कि॥

(ख) उदुम्बरोज्जृम्भित पुष्पभावं
गता लघीयस्यपि मेघमाला
स्फुरन्मनः क्षुण्णमनोरथानां
दुरापतां प्राच्य समीरणोऽभूत् ॥

2. 'जानकीजीवनम्' महाकाव्य के रचयिता का परिचय देते हुए उनके रचना संसार पर प्रकाश डालिए।

3. प्रथम उपाख्यान के आलोक में उपाख्यानमालिका का मूल्यांकन कीजिए अथवा वर्णन कीजिए।

4. रेवाप्रसाद द्विवेदी के काव्यशास्त्रीय मन्तव्य को अपने शब्दों में लिखिए।

5. अनूदित साहित्य पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

खण्ड—ख

निर्देशः *अधोलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।*

$4 \times 10 = 40$

1. 'जानकीजीवनम्' द्वितीय सर्ग का सारंश लिखिए।

2. 'मीरालहरी' के द्वितीय खण्ड का सारांश लिखिए।

3. रेवाप्रसाद द्विवेदी के मत में काव्य की आत्मा क्या है ? विवेचन कीजिए।

4. काव्यालंकारकारिका के आधार पर साहित्य शब्द का विवेचन कीजिए तथा रस की काव्यात्मकता की सिद्धि कीजिए।

5. 'जानकीजीवनम्' के द्वितीय सर्ग की विशेषताएँ लिखिए।

6. उपाख्यानमालिका के आधार पर द्वितीय उपाख्यान का सारांश लिखिए।

7. रेवाप्रसाद द्विवेदी के मत में अलंकार का क्या स्वरूप है ? अवधारणा का उल्लेख कीजिए।